

निर्वाणकांड (हिंदी)

कविश्री भैया भगवतीदास

(दोहा)

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहूँ कांड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय॥१॥

(चौपाई छन्द)

‘अष्टापद’ आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य ‘चंपापुरि’ नामि।
नेमिनाथ स्वामी ‘गिरनार’, वंदौं भाव भगति उर धार॥२॥
चरम तीर्थकर चरम शरीर, ‘पावापुरि’ स्वामी महावीर।
‘शिखर सम्मेद’ जिनेश्वर बीस, भाव सहित वंदौं निश दीस॥३॥
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
‘नग सु तारवर’ मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव सहित कर जोड़ि॥४॥
श्री ‘गिरनार’ शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥५॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, ‘पावागढ़’ वंदौं निरधार॥६॥
पांडव तीन द्रविड़ राजान, आठ कोड़ि मुनि मुक्ति पयान।
श्री ‘शत्रुंजय गिरि’ के सीस, भाव सहित वंदौं निश दीस॥७॥

जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥८॥

राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥९॥

नंग अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥१०॥

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास॥११॥

रेवानदी 'सिद्धवर कूट', पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वय चक्री दश कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव पार॥१२॥

'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि 'गिरि चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर तर्ण॥१३॥

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥१४॥

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥१५॥

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति मँझार, ते वंदौ। नित सुरत संभार॥१६॥

अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढगिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय॥१७॥

वंसस्थल वन के ढिंग होय, पच्छिम दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥१८॥
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान॥१९॥
समवसरण श्री पाश्व जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम जिहाज॥२०॥
'मथुरापुरी' पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल॥२१॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन वच काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय॥२२॥
संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥२३॥

॥ इत्याशीर्णवादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥
